ना आने जाने को

जुटा लिये साधन हम अगणित मंजिल पाने को।
आशायें नित आहत होती मिलता ना जाने को।।
चौराहे भी मन को मोहे, मृग मरीचिका का पाये।
इसीलिये भारी हो निराशा अनजाना बनधाये।।
आहे खाली रहती देखे खुद के तड़पाने को।
जुटा लिये.....

अफ़शाना बन जाये जगमें करतूतें यो खुद की।
वे खो जाये एक एक कर आशा टूटे बुत की।।
पैरो में रोड़ों की चोटे जीवन भर तरसाने को।
जुटा लिये.....

जाने विन युक्ति अपनाये घोर विपत्ति होगी।
पछताने से कुछ ना होये भोगे होय रोगी।।
मरहम दवा असर ना करती आहत पहुचाने को।
जुटा लिये.....

समय निकलते जान न पाये रंगीनी रातो में।
लोभी ढोगी फँस रह जाये बेरस की बातों में।।
कौन कहाँ कस जाने जग में, आफ़त दूर भगाने को।।
जुटा लिये.....

खुद जैसी चाहत मनमें हो वैसी होये पर की।
मानवता अपना सकने को रक्षा करना घर की।।
उपदेशों से पहले करना मन के सुख पाने को।
जुटा लिये.....

सुख दुख का जोड़ा होता है जान जहाँ पर जायें।
चाह रहे ना जीवन भाये नित कल जहाँ समाये।।
अविनाशी खुद मंजिल होये ना आने जाने को।
जुटा लिये.....